Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

फ़रवरी/2022ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

FEBRUARY-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270

Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issu e

महिला सामाजिक कार्यकर्ता स्वर्गीय श्रीमती सिंधु ताई सपकाल पुणे मज्लिस अंसारुल्लाह पुणे द्वारा इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए । (यादगार तस्वीर)

09-10-2021को मौलाना मज़हरुल हक़ पुस्तकालय पटना(बिहार)को श्री शाह महमूद अहमद नाज़िम अंसारुल्लाह ज़िला गया, पटना, अरवाल इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए ।

08-01-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना (बिहार) द्वारा ग़रीब महिलाओं को कम्बल भेंट करते हुए ।

19-12-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह सिकंदराबाद द्वारा ऐक ग़रीब महिला को व्हील चेयर भेंट करते हुए ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

19-12-2021 को उर्दू पुस्तकालय पटना (बिहार) को श्री शाह महमूद अहमद नाज़िम अंसारुल्लाह ज़िला गया, पटना, अरवाल इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए।

19-12-2021 को श्री नितिन नवीन बिहार राज्य मंत्री को श्री शाह महमूद अहमद नाज़िम अंसारुल्लाह ज़िला गया, पटना, अरवाल इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए।

05-12-2021 को एक पुलिस अधिकारी को श्री परवेज़ अहमद रुकुन सिकंदराबाद इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए ।

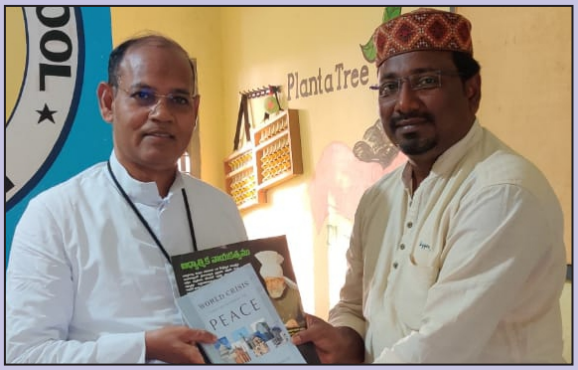

22-12-2021 को एक ईसाई पादरी साहब को श्री मुहम्मद इस्माइल आंध्रा प्रदेश इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए ।

14-01-2022 मज्लिस अंसारुल्लाह उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा आयोजित श्रमदान से पहले इज्तिमाई दुआ करते हुए

12-12-2021 को एक सरकारी अधिकारी को श्री शमीम अहमद ज़ईम अंसारुल्लाह सिकंदराबाद इस्लाम अहमदिय्यत का लिट्रेचर भेंट करते हुए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 फरवरी 2022 **Issue - 2**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफैल अहमद
शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - ख़िलाफत की दृढ़ता के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद की चेष्टाएं।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन अन्सारुल्लाह को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो की सुनहरी नसीहतें	6
हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला का महान कारनामा हिज्री शम्सी कैलण्डर का आरम्भ	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَا أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ○ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ○

(सूरत अल-बलद:आयत 2 से 5)

अनुवाद - ख़बरदार मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ। जबकि तू इस शहर में (एक दिन) उतरने वाला है। और बाप की और जो इस ने सन्तान पैदा की। अवश्य हमने इन्सान को एक निरन्तर मेहनत में (रहने के लिए) पैदा किया।

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اِلَى الْاَرْضِ ، فَيَتَزَوَّجُ ، وَيُوْلَدُ لَهٗ ۔ وَيَمْكُثُ خَمْسًا وَّاَرْبَعِيْنَ ثُمَّ يَمُوْتُ فَيُدْفَنُ مَعِيَ فِيْ قَبْرِيْ فَاَقُوْمُ اَنَا وَعِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ فِيْ قَبْرٍ وَّاحِدٍ بَيْنَ اَبِيْ وَعُمَرَ ۔

(मिशकात, किताबुल फ़ितन, बाब नुज़ूल ईसा इब्न मर्यम)

अनुवाद - :: अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ईसा बिन मर्यम ज़मीन की ओर अवतरित होगा और वह शादी करेगा और इस के यहाँ औलाद होगी। वह धरती पर 45 साल रहेगा फिर जब वह वफ़ात पाएगा तो मेरी क़ब्र में मेरे साथ दफ़न होगा। फिर मैं और ईसा बिन मर्यम ,अबू बकर रज़ि और उमर रज़ि के बीच एक ही कब्र से उठेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

मुस्लेह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी

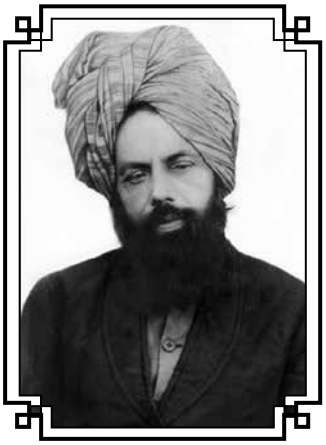

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने 20 फरवरी 1886 ई को एक इश्तिहार प्रकाशित किया। जिसमें "मुस्लेह मौऊद"के बारे में एक महान भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

सम्मान्नीय तथा प्रताप वाले अल्लाह तआला ने जो अत्यन्त दयालु है, जो प्रत्येक बात पर सामर्थवान है(उस की शान महान है तथा उस का नाम प्रशंसनीय है) मुझको अपने इलहाम से सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझ से मांगा। अत: मैंने तेरी दर्दभरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) का स्थान दिया और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (प्यार) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और उपकार (कृपा व उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे दी जाती है। हे मुज़फ्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो क़बरों में दबे पड़े हैं, बाहर आएं और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बरकतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बेरकती (अमांगलिकताओं) के साथ भाग जाए और लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। और वे विश्वास करें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तक्ज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाए। अत: तुझे ख़ुशख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व नस्ल का होगा। सुन्दर, निष्कलंक लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुक़द्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह कंलक से रहित है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आकाश से आता है। उसके साथ फ़ज़्ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शुकोह (प्रतापी) और अज़मत (प्रतिष्ठित) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात् (ध्यान शक्ति, दुआ) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (गम्भीर) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा।.....दोशम्ब: (सोमवार) है मुबारक दोशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक, श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का नूर है जो सत्य है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वयं आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा की सुगंध से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़ता आकाश (अर्थात् ख़ुदा) की ओर उठाया जायेगा। व काना अमरन मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 5 पृष्ठ 647 मजमूआ इश्तिहारात भाग 1 पृष्ठ 124 से 125 प्रकाशन 2019

सम्पादकीय

ख़िलाफ़त की दृढ़ता के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की महान चेष्टाऐं

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में आयत इस्तख़लाफ़ में ख़िलाफ़त की बरकतों का वर्णन करते हुए फ़रमाता है: وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ(नूर:56)अनुवाद :और उन के लिए उन के धर्म को, जो इस ने उन के लिए पसन्द किया, ज़रूर दृढ़ता प्रदान करेगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने धर्म के प्रचार तथा प्रसार और दृढ़ता के लिए ख़िलाफत के चुनाव की संस्था की स्थापना की और इस को मज़बूती प्रदान करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया और अपनी बातों तथा कर्मों, ख़ुत्बों एवं तक़रीरों और निबन्धों एवं व्यावहारिक कार्यों के द्वारा जमाअत के लोगों के दिलों में यह बात कील की तरह गाड़ दी कि अब समस्त आध्यात्मिक उन्नतियां तथा विजय ख़िलाफ़त से जुड़ी हुई हैं

प्रथम ख़िलाफत के च्यन के समय जब जमाअत के बुज़र्गों ने हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि को ख़लीफ़ा चुने जाने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि से मश्वरा मांगा तो आप रज़ि ने दिल की गहराई से फ़रमाया

"हज़रत मौलाना से बढ़कर कोई नहीं और ख़लीफ़ा ज़रूर होना चाहिए और हज़रत मौलाना ही ख़लीफ़ा होने चाहिऐं वर्ना मतभेद का भय है।"

(सवानिह फ़ज़ले उमर रज़ि भाग 1 पृष्ठ 181)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ि को ख़लीफ़ा चुने हुए हुए अभी पंद्रह दिन भी न गुज़रे थे कि अंजुमन के कुछ मैम्बरों ने ख़िलाफ़त के अधिकारों पर प्रश्न करने शुरू कर दिए। जब सम्मान्नीय ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने मौलवी मुहम्मद अली साहिब की मौजूदगी में हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब से भी यही सवाल किया तो आप ने उत्तर में फ़रमाया

"अधिकारों के फ़ैसला का वह समय था जबकि अभी बैअत न हुई थी जबकि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल ने साफ़ साफ़ कह दिया कि बैअत के बाद तुमको पूरा पूरा आज्ञाकालन करना होगा और इस तक़रीर को सुनकर हमने बैअत की तो अब आक़ा के अधिकार निर्धारित करने का अधिकार ग़ुलामों को कब प्राप्त है।"

(आईना सदाक़त,अनवारुल-उलूम भाग 6 पृष्ठ 186)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल के देहान्त पर ख़िलाफ़त के बाग़ियों ने ख़िलाफ़त के वजूद से ही इन्कार कर दिया। परन्तु जमाअत की बड़ी संख्या ने जब हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब रज़ि को ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया तो उपद्रव करने वालों ने आपको असफल करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया। कभी यह फ़ित्ना पैग़ामियों की शक्ल में प्रकट हुआ और कभी मिस्री फ़ित्ना का रूप धारण किया, कभी यह फ़ित्ना मिस्त्रियों के लिबास में प्रकट हुआ और कभी मन्नान, वहाब की शक्ल में उसने चेहरा दिखलाया। कभी ये अंदरूनी हमलों और फ़ित्नों की शक्ल में दिखाई दिया और कभी बाहरी हमलों की शक्ल में नज़र आया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इन समस्त फ़ित्नों का अत्यन्त बहादुरी से मुक़ाबला किया फ़रमाया:

"मुझे ख़ुदा ने ख़लीफ़ा बनाया है और कोई व्यक्ति नहीं जो मेरा मुक़ाबला कर सके अगर तुम में कोई

माँ का बेटा ऐसा मौजूद है जो मेरा मुक़ाबला करने का शौक़ अपने दिल में रखता हो तो वह अब मेरे मुक़ाबला में उठकर देख ले ख़ुदा उस को अपमानित और रुस्वा करेगा बल्कि उसे ही नहीं यदि दुनिया की समस्त ताक़तें मिलकर भी मेरी ख़िलाफ़त को समाप्त करना चाहेंगी तो ख़ुदा उनको मच्छर की तरह मसल देगा और हर एक जो मेरे मुक़ाबला में उठेगा गिराया जाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ बोलेगा ख़ामोश कराया जाएगा और जो मुझे अपमानित करने की कोशिश करेगा वह स्वंय अपमानित और रुस्वा होगा।"

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा,अनवारुल-उलूम भाग 15 पृष्ठ 592)

ख़िलाफ़त की दृढ़ता के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की कोशिशों में एक बड़ा काम ज़ैली तन्ज़ीमों की स्थापना और उनके अह्द में इस बात का स्पष्ट रूप में उल्लेख करना है कि वह हमेशा ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे। ख़िलाफ़त की सुराक्षा और इस की दृढ़ता के लिए हर क़ुर्बानी के लिए हर-क्षण तैयार रहेंगे। और अपनी सन्तान को भी एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल को ख़िलाफ़त से जुड़े रहने की नसीहत करते रहेंगे। दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको ख़िलाफ़त का सुलतान नसीर बनने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

अन्सारुल्लाह को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सुनहरी नसीहतें

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह बर्तानिया 2021 ई के समाप्न ख़िताब में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ की गई कुछ सुनहरी नसीहतें निम्नलिखित हैं

(1) आप जो अपने आपको अन्सारुल्लाह कहते हैं इस बात को हर वक़्त सामने रखें कि अन्सारुल्लाह तभी कहला सकते हैं जब इस ज़माने के इमाम अल्लाह तआला के भेजे हुए हज़रत मसीह मौऊद और महदी मौऊद की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए केवल नाम के अन्सारुल्लाह न हों बल्कि इस रूह को समझते हुए नहनु अन्सारुल्लाह का नारा लगाऐं।

(2) अन्सारुल्लाह की उम्र तो ऐसी उम्र है कि जिसमें अगली ज़िन्दगी का सफ़र ज़्यादा स्पष्ट नज़र आता है और आना चाहिए। जितनी उम्र बढ़ती है मौत उतनी ही क़रीब होती जाती है। इस में हमारी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिऐं फिर मैं कहूँगा इस का अंदाज़ा हम ख़ुद ही सोच कर लगा सकते हैं। हमें तक़्वा धारण करना चाहिए।

(3) अन्सारुल्लाह को सबसे बढ़कर इस्लाम की तब्लीग़ का महान काम करने का सम्बोधित अपने आपको समझना चाहिए।

(4) अत: हमें अपने बैअत के अहद को निभाने के लिए अपने अन्सारुल्लाह के अह्द को निभाने के लिए इस महान काम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सहायक बनने के लिए अपनी समस्त योग्ताओं के साथ इस महान काम को सरअंजाम देने के लिए मैदान में उतरना होगा तभी हम वास्तविक अन्सारुल्लाह कहला सकते हैं।

(5) केवल मुँह से दावा कर देना कि हम अन्सारुल्लाह हैं काफ़ी नहीं है। इस के लिए हमें अपनी समीक्षाएं भी करनी होंगी।

(6) हमें अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या हमने अपनी अवस्थाओं में वह तब्दीली पैदा कर ली है या उस तब्दीली के पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मिश्न को आगे बढ़ाने के लिए ज़रूरी है। अगर नहीं तो हमारा नहनु अन्सारुल्लाह का नारा बिना किसी उद्देश्य के और निराधार है।

(7) अगर ज़िंदगी के मक़सद को हम समझ गए तो हम वास्तविक अन्सार में शामिल हो जाऐंगे क्योंकि यही मापदण्ड प्राप्त करने वाले वो लोग हैं जो नबी के वास्तविक सहायक बन सकते हैं।

(8) तब्लीग़ के लिए ये दो बातें हमेशा याद रखनी चाहिऐं कि अपने कर्म और शिक्षा में समानता पैदा करना और दूसरे धैर्य से काम लेते हुए स्थायी मिज़ाजी से और बर्दाश्त से तब्लीग़ करते चले जाना है। अत: हमें इस बारे में भी अपनी समीक्षा करनी चाहिऐं और तब्लीग़ के काम को आगे बढ़ाना चाहिए।

(9) अन्सारुल्लाह पवित्र क़ुरआन के हुक्मों की तलाश करें। जो मना किए गए काम और करे योग्य आदेश हैं उनको देखें। जो न करने वाली बातें हैं उनसे रुकें। जो करने वाली बातें हैं उनको धारण करें। तभी अन्सारुल्लाह वास्तिवक

बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं और तभी हम वास्तविक रूप में अन्सारुल्लाह बन कर यह पैग़ाम दुनिया को पहुंचा सकते हैं और दुनिया को सीधे रस्ते पर चला सकते हैं।

(10) अन्सारुल्लाह को वास्तविक अन्सारुल्लाह बनने के लिए बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है। अत: अल्लाह तआला की मुहब्बत हमें अपने दिल में पैदा करने की बहुत कोशिश करनी चाहिए कि हमारे कर्म भी इस वक़्त वास्तिवक कर्म बनेंगे जब हम ख़ुदा तआला की मुहब्बत के कारण से नेकियां करने की कोशिश करेंगे।

(11) हज़रत मसीह मौऊद रज़ि अल्लाह ने यह भी फ़रमाया है कि हमारी कामयाबी दुआओं से ही होनी है। अत: जब हम अपनी व्यावहारिक हालतों की तब्दीली के साथ दुआओं और इबादतों के उच्च स्तर प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वास्तिवक अन्सार में गिने जाऐंगे।

(12) हम अन्सार अपनी अगली नस्लों के ज़हनों में सवाल पैदा करने के स्थान पर उनके सुधार और जमाअत से जोड़ने का माध्यम बन सकते हैं। अल्लाह तआला हमें इस का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए

अल्लाह तआला हम सब अन्सार को इन बरकतों वाली नसीहतों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए ताकि हम उचित अर्थों में अन्सारुल्लाह में शामिल हो कर अपने अह्द के अनुसार उत्तम कर्म करने वाले हों। आमीन

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201
Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

हज़रत मुस्लेह मौऊद का एक महान कारनामा हिज्री शम्सी कैलण्डर का आरम्भ
हिज्री शमसी कैलण्डर का दूसरा महीना तब्लीग़ का परिचय
(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, नायब सदर सफ़ दोयम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

ख़ुदाई वादों के अनुसार सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल-मसीह सानी रज़ि का प्रादुर्भव हुआ। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का महान निशान थे। आपके द्वारा जहां अल्लाह तआला की पुस्तक कुरआन का मान सम्मान प्रकट हुआ। वहां इस्लाम में ज़िन्दगी की नई रौनक और चमक पैदा हुई। इस्लामी शिक्षा का कोई विभाग नहीं जिसमें आपने महान कार्य न किए हों।

आपने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में क़ौमी-तथा मिल्लत की ज़िन्दगी के लिए धार्मिक रिवायतों को स्थापित करने की कोशिश फ़रमाई। इस क्रम में हुज़ूर का एक महान कारनामा यह है कि हुज़ूर ने अपनी जमाअत में सन ईसवी के स्थन पर सन हिज्री शमसी को आरम्भ किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के हिज्री शम्सी कलैण्डर के आरम्भ करने से पहले दुनिया में कई कलेंडर जारी थे। इनमें से प्रमुख कैलण्डर ग्रेगोरियन Gregorian) अर्थात ईसवी कैलण्डर कहलाता है। यह सूर्य पर आधारित है इसलिए इसे Solar Calender भी कहा जाता है। इस का आरम्भ जनवरी से होता है और दिसम्बर इस का अन्तिम महीना है।

मुस्लमानों में हिज्री कलेंडर अर्थात इस्लामी कैलण्डर प्रचलित है। हिज्री कलेंडर का आरम्भ दूसरे ख़लीफ़ा सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ख़िलाफ़त के ज़माना में हुआ। हिज्री कैलम्डर का आधार चांद की तारीख़ों पर रखा गया था।

कई मुस्लमान ख़लीफाओं और बादशाहों ने इस्लामी कैलम्डर का आरम्भ किया परन्तु वे स्थायी रूप से जारी न रह सके। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के दूसरे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी रज़ि ने 1938 ई में अपने "सैर रूहानी" वाले मशहूर सफ़र के दौरान जब दिल्ली में जंतर मंत्र देखा तो उसी समय से इरादा कर लिया कि इस बारे में पूर्ण अनुसन्धान करके ईस्वी शम्सी वर्ष के स्थान पर हिज्री शम्सी वर्ष जारी कर दिया जाए।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी ने जनवरी 1939 ई के अरम्भ में ही हिज्री शम्सी कैलम्डर को जारी करने के लिए एक सब कमेटी स्थापित की। जिसके परामर्श के अनुसार जनवरी 1940 ई से हिज्री शम्सी कैलण्डर का आरम्भ हुआ और फ़ैसला हुआ कि जारी ईसवी कैलण्डर के किसी साल और किसी महीना के आरम्भ के दिन और इस के मुक़ाबला के हिज्री शम्सी साल और महीना के आरम्भ के दिन में अब कोई अन्तर नहीं होगा और 1319 हिजरी शम्सी के आरम्भ का दिन वही होगा जो 1940 ई के आरम्भ का

दिन था

हिज्री शम्सी कैलम्डर के महीनों के नाम ऐसे रखे गए जो इस्लामी इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं के लिए यादगार के रूप में थे ताकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ान और दुनिया के लिए क़यामत तक हर क्षण ताज़ा होते रहें। इन महीनों के नाम ये हैं

माह सुलह (जनवरी) माह-ए-तब्लीग़ (फरवरी) माह-ए-अमान (मार्च)माह-ए-शहादत (अप्रैल)माह-ए-हिज्रत (मई)माह वफ़ा (जुलाई) माह ज़हूर(अगस्त)माह तबूक (सितम्बर)माह-ए-इक़्ख़ा(अक्तूबर)माह-ए-नबुव्वत (नवम्बर)माह-ए-फ़तह (दिसम्बर)

आज के इस निबन्ध में हिज्री शम्सी कलैण्डर के दूसरे महीना तब्लीग़ के हवाला से कुछ बातें वर्णन करनी अभीष्ट हैं

पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि اُدْعُ إِلَى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُم بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ (अन्नहल126)अर्थात कुफ़्फ़ार को अपने रब के रास्ता की ओर हिक्मत अर्थात अक़्ल और ख़ूबसूरत नसीहत के द्वारा बुला और कुफ़्फ़ार के साथ बड़े ख़ूबसूरत तरीक़ से मुबाहसा कर। फिर फ़रमाया يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ (अलमायदा 68)अर्थात हे रसूल जो कुछ तेरे रब ने तेरी तरफ़ उतारा है उसे लोगों तक पहुंचा दे। अगर तू ने ऐसा न किया तो तू ने रिसालत का हक़ अदा नहीं किया। और अल्लाह तुझे लोगों से बचाएगा

अल्लाह तआला के इस आदेश के पालन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर तरह से तब्लीग़ की। कभी ख़ाना काअबा में जा कर लोगों को तब्लीग़ की, कभी लोगों को दावत पर बुला कर तब्लीग़ की, कभी सफ़ा मर्वा पहाड़ पर बुला कर सबको इकट्ठा कर के तब्लीग़ की, कभी अकेले तब्लीग़ की, कभी सामूहिक तब्लीग़ की, कभी सफ़र पर आने वालों को तब्लीग़ की, कभी तब्लीग़ के लिए सफ़र किए, कभी तब्लीग़ के लिए मुबल्लिग़ भिजवाए, कभी तब्लीग़ के लिए पत्र भिजवाए, मुश्किल में भी तब्लीग़ की और जहां कष्ट दिया गया वहां भी तब्लीग़ की। और सबसे बढ़कर लोगों की हिदायत के लिए दिन रात रो-रो कर और तड़प-तड़प कर इस तरह दुआएं कीं कि अर्श का ख़ुदा पुकार उठा لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ अर्थात क्या तू उन लोगों के ईमान लाने के लिए अपने आपको हलाक कर लेंगे।

आप ने तब्लीग़ को इस के चरम पर पहुंचा दिया तो आप को कई परीक्षाएं आईं। क़ुरैश ने मिलकर हर किस्म का लालच दिया कि अगर आप माल तथा दौलत चाहते हैं तो हम देने को तैयार हैं और अगर आप बादशाहत चाहते हैं तो अपना बादशाह बना लेने को तैयार हैं अगर बीवियों की ज़रूरत है तो ख़ूबसूरत बीवियां देने को उपस्थित हैं परन्तु आपका जवाब यही था कि मुझे अल्लाह तआला ने तुम्हारे शिर्क के दूर करने के लिए मामूर किया

है जो मुसीबत और तकलीफ़ तुम देनी चाहते हो दो मैं तब्लीग़ से रुक नहीं सकता क्योंकि ये काम ख़ुदा तआला ने मेरे सपुर्द किया है फिर दुनिया की कोई लालच और ख़ौफ़ मुझको इस से हटा नहीं सकता। आप जब ताइफ के लोगों को तब्लीग़ करने गए तो वहां के आवारा लोगों ने आप को पत्थर मारे लेकिन ऐसी मुसीबतों और तकलीफों में भी आप अपने काम से नहीं रुके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम हैं।अलिफ

सुलह हुदैबिया के सफ़र से वापसी पर मदीना तशरीफ़ ले आने के बाद रसूलुल्लाह ने यह इरादा किया कि आप अपनी तब्लीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुंचाएं। कुछ सहाबा रज़ि ने रसूलुल्लाह से निवेदन किया कि बादशाह बिना मुहर के ख़त नहीं लेते। इस पर आपने एक मुहर बनवाई जिस पर "मुहम्मद रसूलुल्लाह" के शब्द इस तरह खुदवाए कि सबसे ऊपर "अल्लाह" फिर "रसूल" और फिर नीचे "मुहम्मद" का शब्द लिखवाया।

मुहर्रम 629 ई में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़त लेकर कई सहाबा कई देशों की तरफ़ रवाना हो गए।

उनमें से एक ख़त क़ैसर रुम के नाम था। क़ैसर रुम का ख़त हज़रत दहिया कलबी रज़ि के हाथ भेजा गया और आपने उसे हिदायत की थी कि पहले वह बस्रा के गवर्नर के पास जाए जो नस्ल से अरब था और इस की माध्यम से क़ैसर को ख़त पहुंचाए।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरा ख़त फ़ारस के बादशाह की तरफ़ लिखा था वह अबदुल्लाह बिन हज़ाफ़ा की माध्यम से भिजवाया गया था।

तीसरा ख़त आप ने नज्जाशी के नाम लिखा जो हज़रत अमरो बिन उमेह ज़मुरी रज़ि के हाथ भिजवाया था। जब यह ख़त नज्जाशी को पहुंचा तो इस ने बड़े सम्मान से इस ख़त को अपनी आँखों से लगाया और हाथी दांत के डिब्बा में रख दिया और कहा कि जब तक यह ख़त महफ़ूज़ रहेगा हब्शा की हुकूमत भी महफ़ूज़ रहेगी। अत: एक हज़ार साल तक इस ख़ानदान की हुकूमत रही।

चौथा ख़त आप ने मक़ूक़स बादशाह मिस्र की तरफ़ लिखा था और यह ख़त हज़रत हातिब बिन अबी बलता रज़ि की माध्यम से आप ने भिजवाया।

पांचवां ख़त आप ने मंज़र तैमी रईस बहरीन की तरफ़ भिजवाया था। यह ख़त इला इब्न हज़रमी रज़ि के हाथ भिजवाया गया था। इस के अतिरिक्त आप ने उम्मान के बादशाह और यमामा के सरदार और ग़स्सान के बादशाह और यमन के क़बीला बनी नहिद के सरदार और यमन के क़बीला हमदान के सरदार और बनी अलीम के सरदार और हज़रमी क़बीला के सरदार की तरफ़ भी पत्र लिखे। जिनमें से अक्सर लोग मुस्लमान हो गए।

आप ने तब्लीग़ का हक़ अदा कर दिया और सारी दुनिया में इस्लाम को फैला दिया और आज तक आप के फ़ैज़ान से दुनिया रुहानी फ़ैज़ान प्राप्त करती है।